PG II CC-7

Topic — Anxiety and Obsessive Disorders

असामान्य मनोविज्ञान में anxiety एवं उससे उत्पन्न मानसिक विकृतियों पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया गया है। चिन्ता से तात्पर्य डर एवं आशंका के दुखद भाव से होता है। इस तरह के चिन्ता में कई तरह के मानसिक विकृतियों की उत्पत्ति होती है, जिसे पहले एक सामान्य नैदानिक श्रेणी अर्थात 'स्नायुविकृति' या मनोस्नायुविकृति में रखा गया। स्नायुविकृति का प्रयोग सबसे पहले William Cullen द्वारा स्नायुमंडल के विकृति संवेदना के लिए 1769 ई. में प्रकाशित सिस्टम ऑफ नोसोलोजी में किया गया था। बाद में फ्रायड तथा उनके सहयोगियों ने स्नायुविकृति का उपयोग चिन्ता से उत्पन्न मानसिक रोगों के लिए किया और आज भी इसका प्रयोग करीब-करीब इसी अर्थ में आम लोगों द्वारा किया जाता है। स्नायुविकृति में कई तरह के मानसिक विकृतियों को रखा गया था, जिसमें चिन्ता स्नायुविकृति, दुर्भीति स्नायुविकृति, रूपान्तर स्नायुविकृति, रोगभ्रमी आदि को रखा गया है। इन सभी के अलग-अलग लक्षण या नैदानिक स्वरूप थे। स्नायुविकृति में बतलाए गए है कि इसके दो भाग है;— पहला स्नायुविकृति केन्द्रक एवं स्नायुविकृति विरोधाभास।

स्नायुविकृति केन्द्रक से तात्पर्य वास्तविकता के दोषपूर्ण मूल्यांकन तथा तनाव से निपटने के बजाए उससे दूर हट जाने की प्रवृत्ति से होता है तथा स्नायुविकृति विरोधाभास से विशेष तरह के जीवन-शैली को उसके कुसमायोजी एवं आत्म-घातक स्वरूप के बावजूद भी बनाए रखने की प्रवृत्ति से होता है।

DSM-IV (TR) में मनोचिकित्सकों ने 'स्नायुविकृति' जैसे नैदानिक श्रेणी को अमान्य घोषित इसलिए किया कि इसमें विभिन्न विशेषताओं या लक्षणों वाले मानसिक विकृतियों को एक श्रेणी में रखना उचित नहीं होगा। क्योंकि उनके भिन्न लक्षणों एवं कारणों का वैज्ञानिक अध्ययन सम्भव नहीं हो पायेगा।

अतः DSM-IV (TR) में 'स्नायुविकृति' जैसी श्रेणी को हटा दिया गया है और 'स्नायुविकृति' जैसी पुरानी श्रेणी को तीन नए भागों में बाँट कर उसके गहन अध्ययन पर बल डाला गया है वे तीन श्रेणियाँ हैं :-

1. चिन्ता विकृति
2. कामरूप विकृति एवं
3. विच्छेदी विकृति।

DSM-IV (TR) में चिन्ता विकृति का तात्पर्य वैसे विकृति से होता है जिसमें रोगी में अवास्तविक चिन्ता एवं अतार्किक डर (irrational fear) की मात्रा इतनी अधिक होती है कि उससे उसका सामान्य जिन्दगी का व्यवहार अपअनुकूलित (maladapted) हो जाता है तथा इसमें व्यक्ति अपने चिन्ता को अभिव्यक्ति बिल्कुल ही स्पष्ट ढंग से करता है। DSM-IV (TR) में चिन्ता विकृति के 6 प्रमुख प्रकार बतलाए गए हैं :-

(i) दुर्भीति (Phobias)
(ii) भीति का विकृति (Panic disorder)
(iii) सामान्यीकृत चिन्ता विकृति
(Generialized Anxiety disorder or GAD)
(iv) मनोग्रस्ति बाध्यता विकृति
(Obsessive-Compulsive disorder or OCD)
(V) उत्तर आघातीय तनाव
(Posttraumatic stress disorder or PTSD)
(VI) तीव्र तनाव विकृति (Active stress disorder)